IJAMSR

International Conference on Latest Trends in Science, Engineering, Management and Humanities (ICLTSEMH -2025)
19th January, 2025, Noida, India.

CERTIFICATE NO : ICLTSEMH /2025/C0125220

राम रामचरित में तुलसी दास-संत संवाद की अवधारणा का अध्ययन

Ram Swroop

Research Scholar, Ph. D. in Hindi
Mansarovar Global University, Sehore, M.P., India.

सारांश

रामचरितमानस में तुलसीदास ने संतों के साथ संवाद की अवधारणा को बहुत गहरे रूप में प्रस्तुत किया है, जो धार्मिक, सांस्कृतिक और नैतिक दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण है। संतों का संवाद तुलसीदास के काव्य में भगवान राम की महिमा, भक्ति और धर्म के सिद्धांतों को समझाने का माध्यम बनता है। संतों से संवाद के माध्यम से तुलसीदास ने यह संदेश दिया कि एक भक्त को भगवान के प्रति अपनी भक्ति को निरंतर साधना चाहिए और जीवन के हर पहलू में सत्य, धर्म और अहिंसा का पालन करना चाहिए। रामचरितमानस के विभिन्न हिस्सों में संतों और तुलसीदास के संवाद में यह देखा जाता है कि संत जीवन के वास्तविक उद्देश्य को समझने में सक्षम होते हैं और वे हमेशा भक्तों को सही मार्ग दिखाने के लिए तैयार रहते हैं। उदाहरण के लिए, जब तुलसीदास को भगवान राम की महिमा के बारे में संदेह होता है, तो वे संतों से मार्गदर्शन प्राप्त करते हैं। इस संवाद में संतों के उपदेशों के माध्यम से तुलसीदास भगवान राम के आदर्शों और भक्ति के मार्ग को समझ पाते हैं, जो जीवन को सच्चे रूप में जीने का सही तरीका है। यह संवाद न केवल धार्मिक बल्कि सामाजिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि तुलसीदास ने संतों के माध्यम से यह भी दर्शाया है कि जीवन में संतों के साथ सही संवाद और विचार-विमर्श से व्यक्ति अपने जीवन को संवार सकता है।